पद २६४ (राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

कृष्णजी। तोहे चरनन बल जाऊं बलैया।।३।।

हाकारत। पाछे पुकरात जसोदा मैया।।२।। मानिक के प्रभु नाथ

चल जाऊं रे बन आज कन्हैया।।ध्रु.।। लिये रोटी पाछे बांध

सिदोरी। लिये कुछ आब दही दूध मलैया।।१।। गौवन भार गोविंद